VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

संस्मरण विधा का स्वरूप

प्रा. डॉ. शैलजा जायसवाल
सहयोगी प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग
म. स. गा. महाविद्यालय मालेगाव नाशिक.
dr.shailajajaiswal@gmail.com

भाषा की श्रेष्ठता एवं प्रौढ़ता हमें साहित्य में प्राप्त होती है । भाषा के परिमार्जित स्वरूप को हम साहित्यिक कसौटी पर कसते है, चाहे वह कविता हो या फिर गद्य साहित्य की कोई भी विधा हो । आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं का श्रीगणेश हुआ और प्रसार हुआ, जिनमें संस्मरण साहित्य अथवा संस्मरण लेखन भी है । संस्मरण लेखन साहित्य की नव विकसित नूतन विधा है । संस्मरण साहित्य में मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं का अध्ययन होता है, उसकी सभी भावनाओं, विचारों, स्वभाव आदि का अध्ययन होता है । संस्मरण लेखन मनुष्य जीवन की स्वाभाविकता पर अधारित होता है । इसमें यथार्थ और प्रत्यक्षता की गहरी और अमिट छाप होती है । संस्मरण कला मनुष्य जीवन अत्यन्त निकट की कला है। संस्मरण कला में सत्यकथा का निरूपण, रोचकता, वैयक्तिकता आदि गुण विद्यमान होते है। संस्मरण लेखक में कलाकार अतीत के किसी पात्र, प्रसंग उनके समकालीन प्रमुख व्यक्तित्व आदि को अधार बना कर अपनी अनुभूतियों द्वारा व्यक्त करता है ।

संस्मरण लेखक के निजी अनुभव, उसकी निजी स्मृतियाँ, विशिष्ट व्यक्तियों के क्रियाकलाप, जिसने अपने साहित्य, देश,समाज में इतिहास बनाने में भूमिका अदा की हो । किसी घटना का आँखो देखा हाल आदि विषय नृत्य करने लगते है और अनुभूतियों के रूप में लेखक अपनी कलम से उसे उपस्थित करता है अथवा अभिव्यक्त करता है ।

संस्मरण विधा हाशिए से उठकर केन्द्र में आनेवाली विधा है, यह विधा निरन्तर विकसित होती हुई साहित्य की गद्य विधाओं में अपना विशिष्ठ स्थान बना रही है और इसका स्थान कविता, कहानी, उपन्यास नाटक आदि की तरह केन्द्रिय विधाओं में समाविष्ट हो चुका है । संस्मरण शब्द व्युत्पति की दृष्टि से सम् + स्मृ + ल्यूट (अण) प्रत्यय लगने से बना है । जिसका शाब्दिक अर्थ सम्यक, स्मरण, सम्यक स्मृति पूर्ण रूपेण स्मरण अर्थात सहज आत्मीयता तथा गंभीरतापूर्वक किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु आदी का पूर्णरूपेण स्मरण करना । इससे स्पष्ट होता है कि संस्मरण का मूल आधार स्मरण या स्मृति है । यह स्मृतियाँ या यादें कभी महान व्यक्तियों के साथ जुड़ी होती है तो कभी साधारण व्यक्ति के साथ जुड़ी होती है । स्मृतियाँ किसी के भी साथ जुड़ी हो लेखक उनके माध्यम से मानवीय गुणों को प्रस्तुत करता है जो समाज एवं मनुष्य से जुड़े होते है । इस स्मृति के आधार पर विषय या व्यक्ति के सम्बद्ध में रचे गए ग्रंथ को स्मरण कह सकते है । स्मरण के इस महत्व को स्वीकार करते हुए विभिन्न विद्वानों ने इसका विश्लेषण किया है ।

“डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत संस्मरण साहित्य की परिभाषा और स्वरुप के सम्बद्ध में लिखते भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अतिरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट रोचक रंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है तो उसे संस्मरण कहते है ।“

डॉ. नगेन्द्र ने इसकी महता के सम्बद्ध में कहते है :- वैयक्तिक अनुभ तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अपना वर्णन कहा है । विविध क्षेत्रों में कार्य करनेवाले विख्यात व्यक्ति स्वभावत: जब किसी अन्य महापुरूष अथवा विशिष्ठता सम्बद्ध पुरूष के सम्बद्ध में चर्चा करते है । अथवा स्वयं के जीवन के किसी अंश को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते है तब संस्मरण का जन्म होता है ये संस्मरण अतीत को सजीव करते है ।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा संस्मरण की विश्लेषित कर लिखते है : “यह संस्मरण शब्द अंग्रेजी में दो रुपों में प्रस्तुत होता है ‘मेमायर्स’ और ‘रिमेम्बरिज’ ये दोनों शब्द क्रमश: आत्मकथा और संस्मरण के पर्याय बैठते है । संस्मरण लेखक यदि अपने सम्बद्ध में लिखे तो उसकी रचना आत्मकथा के निकट होती और अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखे तो वह जीवनी के निकट । इस दृष्टि से स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति या विषय के सम्बद्ध में लिखित ग्रंथ को संस्मरण कह सकते है ।“

बाबू गुलाबराय संस्मरण कला के सम्बद्ध में लिखते है कि : “वे (संस्मरण) प्राय : घटनात्मक होते है, किन्तु घटनाएँ सत्य होती है और साथ ही चरित्र की परिचयात्मक भी उनमें थोड़ा सा चटपटेपन का भी आकर्षण होता है । संस्मरण चरित्र के किसी भी एक पहलू की झाँकी देते है ।“

डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने संस्मरण की व्याख्या नए ढंग से की है उनका मत है की, संस्मरण ललित निबन्ध का बहुत ही लोकप्रिय प्रकार है । बीते काल की घटना को बार-बार दुहराकर न सिर्फ मनुष्य संतोष पाता है, बल्कि वह अपने वातावरण में घटित समसामयिमता की अतीत के चित्रों से तुलना करके अपने को जाँचता बदलता रहता है ।

इस तरह संस्मरण कला व्यक्ति की नीजी अनुभूतियों को साकार करता है यह अनुभूतियाँ लेखक को भीतर ही भीतर कुदेरती रहती है और उसके मन को उद्वेलित करती रहती है । जैस राख में छिपे कोयले अनुकूल वायु के स्पर्श से सजग हो उठते है वैसे ही संस्मरण मन में बसी अनुभूतियों अभिव्यक्त होकर साकार रूप ग्रहण कर लेती है । संस्मरण समाज को नई दृष्टि प्रदान करते है । संस्मरण का आधार स्मृति होती है ।

संस्मरण लेखन में दो रूप प्रमुख होते है । प्रथ्म रूप मे वह दूसरों के बारें में लिखता है दूसरे में वह स्वयं के बारें में लिखता है । दूसरों के बारे में लिखने वाले संस्मरण को रिमिनिसेंस और अपने स्वयं के संस्मरण को, ‘मेमोयर’ कहते है । संस्मरण में लेखक उन्हीं अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का चित्रण करता है, जिसमें उसकी अपनी अनुभूतियाँ होती है । अतीत का चित्रण, अन्तरंग सम्बन्ध, प्रामाणिकता, वैयक्तिकता आदि संस्मरण के प्रमुख अंग होते है । इस तरह संस्मरण एक लचकदार विधा है इसके गुण एवं तत्व अनेक विधाओं एवं कलाओं में घुल-मिल जाते है । चित्रात्मकता, कलात्मकता, तटस्था, खण्ड विशेष का चित्रण आदि इसके गुण है ।

संस्मरण कला को शैली एवं तत्वों अनुसार आत्मकथात्मक संस्मरण, पत्रात्मक संस्मरण, डायरी

संस्मरण, जीवनी संस्मरण, रेखाचित्र संस्मरण, यात्रा संस्मरण आदी रूप में उपलब्ध होते है ।

आत्मकथात्मक संस्मरण :

इस संस्मरण में लेखक का ध्यान स्वयं पर केन्द्रीत होता है, जब लेखक स्वयं के जीवन के संस्मरण स्पष्ट रूप से लिखता है तब उसे आत्मकथात्मक शैली संस्मरण कहते है इस शैली का आरम्भ भारतेन्दू युग सेही हो गया था । भारतेन्दू ने स्वयं “कुछ आप बीती कुछ जब बीती” शीर्षक से अपने जीवन और कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों का चित्रण किया है ।

सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक आदि विभिन्न क्षेत्रों के महान व्यकियों ने अपने आत्मकथात्मक संस्मरण लिख कर इस विधा से समुह किया । आत्मकथात्मक शैली में लेखक मै नाम से संस्मरण लिखता है । शांतिप्रिय द्विवेदी जी ने परिब्राजक की प्रजा, संस्मरण पाण्डेय बेचैन शर्मा उग्र का अपनी खबर संस्मरण इसी श्रृंखला के अन्तर्गत आते है । इनके अतिरिक्त सेठ गोविन्द दास किशोरीदास वाजवेयी, हरिवंशराय बच्चन आदि भी इस विधा मे अपना विशेष योगदान दिया है ।

आत्मकथात्मक संस्मरण काल्पनिक नहीं होता है जीवन की घटनाओं से इसका ताना-बाना बुना जाता है । आत्मकथात्मक लेखन में स्वयं को केन्द्र में रखकर परिवेश को देखता है । मेमोयर में संस्मरण को केन्द्र में रखता है और लेखक की स्थिति गौण हो जाती है और सम्पर्क में आयी घटनाएँ, स्मृतियाँ, व्यक्ति प्रमुख हो जाता है ।

पत्रात्मक संस्मरण :

पत्र लेखन भी संस्मरण लेखन की एक शैली है, इसमें पत्रों के माध्यम से संस्मरणों की रचना की जाती है, इस शैली के अग्रज बनारसीदास चतुर्वेदी है । इन्होंने ‘पद्मसिंह शर्मा के पत्र’ कृति की रचना कर इस विधा को गौरव प्रदान किया है । अंग्रेजी साहित्य में ‘शैली और कीट्स’ के पत्र उनके काव्य क समीक्षा करने में सहाय्यक सिद्ध हुऐ है । पत्रात्मक शैली में लेखक अपनी नीजी अनुभूति को संस्मरण पत्रों द्वारा प्रकट करता है, महान विद्वानों, व्यक्तियों द्वारा लिखित पत्रों का अपना विशेष महत्व होता है । एक लेखक के लिए महान व्यक्तियों के साहित्यकारों के पत्र बहुमूल्य सम्पति होती है । राहुल सांस्कृत्यायन के ‘प्रवास के पत्र’ इस शैली का प्रमुख संस्मरण है । इस शैली में लिखने वाले अन्य लेखकों में रामधारी सिंह दिनकर, धर्मवीर, भारती, जैनेन्द्र, प्रेमचंन्द, पं. नेहरू, पंत आदि प्रमुख है । इस शैली द्वारा साहित्यिक और मानवीय विचारोंका आभास मिलता है ।

जीवनी संस्मरण :-

जीवनी शैली में संस्मरण लेखक अन्य व्यक्तियों के सम्बध में लिखता है । अंग्रेजी में इसे ‘बायोग्राफी’ कहते है । जीवनी संस्मरणों में लेखक किसी व्यक्ति के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण करता है जिससे संस्मरणकार जिससे वह स्वयं प्रभावित होता है इस शैली को विकसित करने में रामनरेश त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द, रामवृक्ष शर्मा, प्रेमचन्द आदिने अपना विशेष योगदान दिया है । इस शैली में लेखक स्वयं अपनी मर्जी से किसी व्यक्ति के जीवन को चित्रों को चुनता है । ‘पथ के साथी’ संस्मरण में महादेवी वर्मा लिखती है । अपने अंग्रेजो सहयोगियों के सम्बंध में, अपने आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता मैंने साहस तो किया है पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्रता था असंगता मेरे लिए संभव नहीं है । मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते है, उसमें वे बहुत उज्ज्वल और विशाल है इसे मानकर पढ़ने वालो ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे । पथ के

साथी में मैथली शरण गुप्त, प्रसाद पंत निराला आदि की जीवन स्केच है ।

डायरी संस्मरण :

में लेखक डायरी में संस्मरण लिखता है आधुनिक काल में इस शैली में संस्मरण लिखने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है । डायरी शैली संस्मरण लखकों में डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, रामवृक्ष बेनीपुरी, गिरिधर शर्मा, राहूल सांस्कृतायन आदि प्रमुख है ।

'प्रवास की डायरी' संस्मरण में बच्चन जी ने विदेश भ्रमण के संस्मरणो का सुन्दर चित्रण किया है । दिनकर की डायरी में 24 अप्रेल 1961 से दिसम्बर 1972 तक की घटनाओं का उल्लेख है । इस डायरी संस्मरण में दिनकर जी के बहुमूल्य विचार प्रस्तुत है जिसका अपना विशेष महत्व है । डायरी में लेखक बीते हुए पल लिख कर रखता है । लेखक अपने संस्मरण डायरी में लिखता है निजता डायरी लेखन की अपनी विशेषता है संस्मरण कभी डायरी से दूर होकर आत्मकथा तक पहूँच जाते है । प्रासंगिक दृष्टि से मूल्यवान बातों, विषयों को लेखक डायरी से संस्मरण उपस्थित करता है । नेहरू जी, राजेन्द्र प्रसाद, राधाकृष्ण मैथली शरण गुप्त आदि के सम्बध में दिनकर जी के विचार हमें उनकी डायरी से प्राप्त होते है जो हिन्दी के संस्मरण साहित्य के लिए अनुपम देन है ।

यात्रा संस्मरण :

हिन्दी संस्मरण के यात्रा शैली के प्रणेता बहुमुखी प्रतिभा के धनी राहुल सांस्कृतायन को माना जाता है । राहुल सांस्कृतायन ने मध्य एशिया का इतिहास हिन्दी भाषा में यात्रा संस्मरण द्वारा बताया है । इनके यात्रा संस्मरण के कारण साहित्य अकादमी एवं पद्म विभूषण से इन्हें सम्मानित किया गया । युरोप की लगभग 20 यात्राओं का संस्मरण यात्रा के पन्ने में रचना में है । इन्होंने यात्रा 1926 से यात्रा संस्मरण लिखना आरम्भ किया और 40 वर्षोतक यात्रा ही करते रहे । इन्होंने यात्रा संस्मरणों द्वारा, समाज, इतिहास, संस्कृति, अर्थ व्यवस्था, राजनीति चहल-पहल, पर्यावरण चिंता आदि विषयों का समावेश अपने संस्मरण साहित्य में किया है । राहुल सांस्कृतन के अतिरिक्त अज्ञेय का 1960 में रचित एक बूँद सहसा उछली अरे यायावर रहेगा निर्मल वर्मा का 1964 में रचित चीड़ों पर चांदनी आदि संस्मरण हिन्दी के उत्कृष्ट संस्मरण है । अनुभव के आधार पर मानव के जीवन को पहले से अधिक उत्कृष्ट बनाना उन्हें सही राह दिखाना साहित्य का उद्देश्य होता है । प्रेम, विरह, वेदना, राजनीति, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, संदर्भो के वर्णन के साथ यात्रा संस्मरण का उद्देश्य भी यही है । यात्रा संस्मरणों द्वारा देश विदेश की संस्कृति उन क्षेत्रों की विशिष्ठिता, सामाजिक संस्मरण भाषा शैली आदि द्वारा अपने अनुभव बाँटना ।

हिन्दी के अन्य यात्रा संस्मरण लेखकों में 1938 में ई नागार्जुन लंका से लौट कर घुम्मकड जीवन वृतांत लिखा । 1952 में रामवृक्ष बेनीपूरी के पैरों में पंख बाँधकर रचना, 1953 में यशपाल का लोहे की दीवार संस्मरण, 1959 भगवती शरण उपाध्याय का सागर की लहरों पर, 1953 मोहन राकेश कृत आखरी चट्टान तक, 1966 मे फणेश्वर नाथ रेणु ऋणजल, धनजल संस्मरण, यूरोप के स्कैच रामकुमार का यह संस्मरण चित्रात्मक शैली का संस्मरण है ।

कृष्णा सोबती का संस्मरण बुद्ध का कमण्डल लद्दाख रंगीन फोटो सह संस्मरण है । इस तरह यात्रा संस्मरण निरन्तर गतिशील विधा है ।

रेखाचित्र संस्मरण :-

रेखांकित और संस्मरण की सीमा रेखा अत्यन्त सूक्ष्म है । यह इतनी मिली-जुली होती है कि संस्मरणात्मक रेखाचित्र कहा है । महादेवी वर्मा की रचनाएँ इसका प्रमाण है । इनकी 'स्मृति की रेखाएँ' रचना इसका प्रमाण है । लेकिन संस्मरण और रेखाचित्र के स्वरूप को यहाँ समझना आवश्यक है । संस्मरण और रेखाचित्र दोनों गद्य मिलती जुलती गद्य विधाएँ है ।संस्मरण को अंकित करते समय लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है । रेखाचित्र किसी वस्तू, व्यक्ति, घटना या भाव का कम से कम शब्दों मे मर्मस्पर्शी भावपूर्ण और सजीव अंकन है । अंग्रेजी में इसे स्केच कहा जाता है । जो घटनाएँ घट चुकी है उनको पुन: रेखाचित्र जीवता प्रदान करता है । महादेवी वर्मा का संस्मरण रेखाचित्र और संस्मरण का मिला जुला रूप है । अतीत के चलचित्र, पथ के साथी आदी इनके प्रमुख रेखाचित्र है । स्मृति के रेखाएँ में स्मृति शब्द कृति को संस्मरण की ओर सकेत करता है और रेखाएँ शब्द रेखाचित्र विधा की ओर सकेत करता है ।

संस्मरण आधुनिक काल की निरन्तर विकसित विधा है इसमें लेखक अपने अनुभवों को कभी किसी व्यक्ति के माध्यम से व्यक्त करता है तो कभी घटना, वस्तु या क्रियाकल्प के माध्यम से ये घटनाएँ कभी महान व्यक्ति के साथ जुडी होती है तो कभी साधारण व्यक्ति के साथ जुड़ी होती है । संस्मरण किसी के भी हो, किसी से भी जुड़ी हो लेखक उसके माध्यम से मानवीय गुणों को तलाश कर हमारे सम्मुख रखता है जिससे हमारा मन मस्तिष्क नीरस न बनें यांत्रिक न बनें । संस्मरण और रेखाचित्र को अक्सर एक माना गया जबकि दोनों की प्रवृत्ति में अन्तर है और दोनों अलग संज्ञा पाने की अधिकारिणी है ।

आज संस्मरण विधा आधुनिक काल की लोकप्रिय विधा बन चुकी है । इस विधा का आरम्भ 1905 में महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित "अनुमोदान का अंत" से माना जाता है । 1907 प्रताप नारायण मिश्र पर लिखे गये संस्मरण को जो की बालमुकुन्द गुप्त द्वारा रचित है इसे हिन्दी का प्रथम संस्मरण माना जाता है । इसी श्रृंखला में बाल मुकुन्द गुप्त द्वारा ही रचित "हरिमौंध जी का संस्मरण" है । यह विधा अनवरत रूप मे प्रवाहित होती रही । 1907 में काशी प्रसाद जायसवाल द्वारा रचित "इग्लैण्ड के देहात में महाराज" संस्मरण प्रकाशित हुआ । 1911 से संस्मरण साहित्य निरन्तर विकास की बढ़ने लगा । सन 1918 में रामकुमार खेमका कृत "इधर उधर की बातें", रामकृष्ण बेनीपुरी का "माटी की मूरने", देवेन्द्र सत्यार्थी कृत "रेखाएँ बोल उठी", कन्हैया लाल मिश्र का "माटी हो गई सोना" संस्मरण साहित्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । सन 1921 में वृन्दावन लाल वर्मा कृत कुछ संस्मरण, इलाचन्द जोशी का प्राथमिक जीवन की स्मतियाँ रचनाएँ प्रकाशित हुई । इस विधा को अग्रसर करने में जगदिश खन्ना, पांडूरंग खानखोजे, जगदिश बिहारी सेठ आदि लेखकों ने भी सहयोग दिया । सन 1932 में शिवराम पांडे कृत मदन मोहन की स्मृतियाँ, 1937 में श्रीराम शर्मा कृत "बोलीत प्रतिमा", सन 1940 मे राजा राधिका रमण कृत "टूटा तारा", सन 1942 में राम नरेश त्रिपाठी कृत "तीस दिन मालवीय जी के साथ", 1946 में शिवपूजन सहाय कृत "वे दिन वे लोग" आदी संस्मरणों ने साहित्य को नई दिशा प्रदान की । स्वतन्तत्रा प्राप्ति के पश्चात संस्मरण साहित्य चरम उत्कर्ष की ओर बढ़ने लगा । सन 1957 में श्री राम शर्मा कृत "वे जीते कैस है", 1962 मे अमृता प्रितम

कृत "अतीत की परछाईयाँ", 1965 में रामधारी सिंह दिनकर कृत "लोकदेव नेहरू", नगेन्द्र कृत (1967) "चेतना के बिम्ब", जगदिश चन्द्र माथुर कृत (1971)"जिन्होंने जीना जाना", कमलेश्वर कृत (1975) "मेरे हमदम मेरे दोस्त" आदि संस्मरणो ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । सन 1971 में महादेवी वर्मा कृत "स्मारिका", सन 1977 में कृष्णा सोबती का सस्मरण "हम हशमत", 2000 में राजेन्द्र यादव कृत " वे देवता नहीं", 2001 में रामदरश मिश्र "अपने अपने रास्ते", सन 2007 में कान्ति कुमार जैन कृत "अब तो बात फैल गई", सन 2009 में ममता कालिया कृत "कितने शहरों में कितनी बार" आदी संस्मरण लोकप्रिय हुए । इसी श्रृंखला में गुलजार कृत "पिछले पन्ने", अज्ञेय कृत यात्रा संस्मरण "अरे यायावर रहेगा याद" पुष्पा भारती कृत "प्रेम पियाला जिन पिया" आदी संस्मरणों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है ।

संस्मरण साहित्य को विकसित करने में "हंस सुधा", "विशाल भारत", "सरस्वती", "साहित्य संकेत", "आजकल", "मधुरी" आदी पत्रिकाओं का विशिष्ट योगदान रहा है । संस्मरणों की भाषा में सहजता एवं प्रवाहशीलता होती है । विवरणात्मक शैली, विचारात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली आदि का प्रयोग संस्मरण साहित्य में हुआ है ।

संस्मरण साहीत्य का उद्देश्य मानव मूल्यों का विकास रहा है । देश प्रेम, सामाजिक कर्तव्य, उच्च चरित्र, भारत का भविष्य, भारत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गौरव, नारी, युवा पीढ़ी, मजदूर और किसान आदि जीवन से संम्बंधित लेखक के उत्तरदायित्व का निर्वाह संस्मरण साहित्य की उपलब्धि है ।

संदर्भ सूची :-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, नगेन्द्र, द्वितीय
2. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा
3. हिन्दी का संस्मरण साहित्य, राजरानी शर्मा
4. हिन्दी साहित्यानुशील, सत्यकाम वर्मा